Sign in to edit and save changes to this file.

शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

वर्ष: 6, अंक : 272 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, मंगलवार
18 जनवरी, 2022
मूल्य ₹ 3.00

www.shashwattimes.com

बदलते मौसम में अधिक लाभ हेतु करें ग्लेडियोलस में देखभाल

शाश्वत टाइम्स

कानपुर। चंद्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ डीआर सिंह के निर्देशन में उद्यान विज्ञान विभाग के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष डॉ विवेक कुमार त्रिपाठी ने बताया कि विभिन्न रंग बिरंगे फ्लोरेट्स के साथ कट फ्लावर के रूप में अतिथियों को देने के लिए बुके के रूप में प्रयोग किये जाने वाले ग्लेडियोलस के कॉर्म्स को सामान्यतः अक्टूबर के महीने में समतल खेत में या मेड बनाकर 20 × 20 सेंटीमीटर या 25 से 30 सेंटीमीटर की दूरी पर लगाते है। वैसे तो सामान्यतः ग्लेडियोलस शरद ऋतु में ही 18 से 25 डिग्री सेल्सियस तापक्रम पर अच्छी तरह पुष्पन करता है लेकिन जब तापक्रम 1 से 4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तब उस पर पुष्पन कम हो जाता है और यदि किसान भाइयों ने रोपड़ देर से (नवंबर के अंतिम सप्ताह से दिसंबर में) किया है। तो इस समय पौधों की वृद्धि अधिक प्रभावित होती है। 1 डिग्री सेल्सियस तापक्रम पहुंचने पर पौधों की स्पाइक भी प्रभावित हो जाती है। और उसमें फ्रीजिंग इंजरी हो जाती है। इससे बचाव के लिए खेत में पलवार बिछाकर नमी बनाए रखना अति आवश्यक होता है। जब स्पाइक निकलना प्रारंभ हो जाएं तब डंडे की सहायता से पौधों को सपोर्ट देना भी आवश्यक है इसके लिए डंडे को इस प्रकार से गाडते हैं कि कॉर्म्स क्षतिग्रस्त न हो, और निकल रही स्पाइक को बांध देते हैं और पौधे के पास हल्की मिट्टी भी चढ़ाना अत्यावश्यक होता है। डॉक्टर त्रिपाठी ने बताया कि स्पाइक का नीचे का फूल से हल्का रंग दिखाई देने लगे तो स्पाइक को सावधानीपूर्वक तेज चाकू से काट कर, पानी भरी बाल्टी में रखते जाते हैं और बाद में उनको ऊपर के सभी फ्लोरेटस क्षतिग्रस्त हुए बिना लंबे (ट्यूबलाइट के) डिब्बे में इस प्रकार रखते हैं कि उनके फ्लोरेट्स क्षतिग्रस्त न होने पाए। इस प्रकार से एक कोर्म्स लगाने पर कम से कम दो से तीन स्पाइक और बाद में दो से तीन कोर्म्स और 15 से 20 कारमेल्स प्राप्त हो जाने के कारण एक हेक्टेयर क्षेत्र से डेढ़ से दो लाख की आय किसान को प्राप्त हो जाती है। किसान भाई लाल रंग के फ्लोरेट्स वाली स्पाईक प्राप्त करने के लिए फातिमा, बंटम, डिकेनथालोन, आदि, सफेद रंग के लिए अल्थीना, ड्रीम गर्ल, ईस्टर्न स्टार, सुपरस्टार, मून फ्रॉस्ट, आदि, पीले रंग के लिए गोल्डन हार्वेस्ट, लाइमलाइट, मेडूसा सपना स्वीट फेरी, आदि, ऑरेंज के लिए फीस्टर, ऑरेंज ब्यूटी, टेनजरइन, जिप्सी डांसर, आदि और जातियों को अपनी पसंद के अनुसार लगा सकते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है की अत्यधिक ठंड में ग्लेडियोलस की खेती का प्रबंधन करके सभी स्पाइक्स को बचाया जा सकता है।

बदलते मौसम में ग्लेडियोलस में देखभाल आवश्यक

एक डिग्री पारा पहुंचने पर पौधों की स्पाइक भी होती है प्रभावित

डॉ विवेक कुमार

कानपुर, 17 जनवरी। चंद्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ डी आर सिंह के निर्देशन में उद्यान विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ विवेक कुमार त्रिपाठी ने बताया कि विभिन्न रंग बिरंगे फ्लोरेट्स के साथ कट फ्लावर के रूप में अतिथियों को देने के लिए बुके के रूप में प्रयोग किये जाने वाले ग्लेडियोलस की काफी डिमांड है, जोकि किसानों के लिए अत्याधकि लाभ भी पहुंचाती है। शरद ऋतु में सामान्यतः ग्लेडियोलस 18 से 25 डिग्री सेल्सियस तापक्रम पर अच्छी तरह पुष्पन करता है लेकिन जब तापक्रम 1 से 4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तब उस पर पुष्पन कम हो जाता है। इसलिए यदि किसान भाइयों ने रोपड़ देर से (नवंबर के अंतिम सप्ताह से दिसंबर में) किया है तो इस समय पौधों की वृद्धि अधिक प्रभावित होती है। 1 डिग्री सेल्सियस तापक्रम पहुंचने पर पौधों की स्पाइक भी प्रभावित हो जाती है।

फ्रीजिंग इंजरी होने पर बचाव करें किसान भाई

उसमें फ्रीजिंग इंजरी हो जाती है। इससे बचाव के लिए खेत में पलवार बिछाकर नमी बनाए रखना अति आवश्यक होता है। जब स्पाइक निकलना प्रारंभ हो जाएं तब डंडे की सहायता से पौधों को सपोर्ट देना भी आवश्यक है। इसके लिए डंडे को इस प्रकार से गाडते हैं कि कॉर्म्स क्षतिग्रस्त न हो, और निकल रही स्पाइक को बांध देते हैं और पौधे के पास हल्की मिट्टी भी चढ़ाना अत्यावश्यक होता है। वैज्ञानिक ने बताया कि स्पाइक का नीचे का फूल से हल्का रंग दिखाई देने लगे तो स्पाइक को सावधानीपूर्वक तेज चाकू से काट कर, पानी भरी बाल्टी में रखते जाते हैं और बाद में उनको ऊपर के सभी फ्लोरेटस क्षतिग्रस्त हुए बिना लंबे (ट्यूबलाइट के) डिब्बे में इस प्रकार रखते हैं कि उनके फ्लोरेट्स क्षतिग्रस्त न होने पाए। इस प्रकार से एक कोर्म्स लगाने पर कम से कम दो से तीन स्पाइक और बाद में दो से तीन कोर्म्स और 15 से 20 कारमेल्स प्राप्त हो जाने के कारण एक हेक्टेयर क्षेत्र से डेढ़ से दो लाख की आय किसान को प्राप्त हो जाती है। किसान भाई लाल रंग के फ्लोरेट्स वाली स्पाईक प्राप्त करने के लिए फातिमा, बंटम, डिकेनथालोन, आदि, सफेद रंग के लिए अल्थीना, ड्रीम गर्ल, ईस्टर्न स्टार, सुपरस्टार, मून फॉस्ट, आदि, पीले रंग के लिए गोल्डन हार्वेस्ट, लाइमलाइट, मेडूसा सपना स्वीट फेरी, आदि, ऑरेंज के लिए फीस्टर, ऑरेंज ब्यूटी, टेनजक्ष्न, जिप्सी डांसर, आदि और जातियों को अपनी पसंद के अनुसार लगा सकते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है की अत्यधिक ठंड में ग्लेडियोलस की खेती का प्रबंधन करके सभी स्पाइक्स को बचाया जा सकता है।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्षः12 | अंकः362 | देहरादून, सोमवार, 17 जनवरी, 2022 | पृष्ठः08

बदलते मौसम में अधिक लाभ के लिए करें ग्लेडियोलस में देखभाल: विवेक कुमार

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर उद्यान विज्ञान विभाग के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष डॉ विवेक कुमार त्रिपाठी ने बताया कि विभिन्न रंग बिरंगे फ्लोरेट्स के साथ कट फ्लावर के रूप में अतिथियों को देने के लिए बुके के रूप में प्रयोग किये जाने वाले ग्लेडियोलस के कॉर्म्स को सामान्यतरू अक्टूबर के महीने में समतल खेत में या मेढ़ बनाकर 20×20 सेंटीमीटर या 25 से 30 सेंटीमीटर की दूरी पर लगाते है वैसे तो सामान्यतः ग्लेडियोलस शरद ऋतु में ही 18 से 25 डिग्री सेल्सियस तापक्रम पर अच्छी तरह पुष्पन करता है लेकिन जब तापक्रम 1 से 4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तब उस पर पुष्पन कम हो जाता है और यदि किसान भाइयों ने रोपड़ देर से (नवंबर के अंतिम सप्ताह से दिसंबर में) किया है तो इस समय पौधों की वृद्धि अधिक प्रभावित होती है 1 डिग्री सेल्सियस तापक्रम पहुंचने पर पौधों की स्पाइक भी प्रभावित हो जाती है। और उसमें फ्रीजिंग इंजरी हो जाती है। इससे बचाव के लिए खेत में पलवार बिछाकर नमी बनाए रखना

अति आवश्यक होता है जब स्पाइक निकलना प्रारंभ हो जाएं तब डंडे की सहायता से पौधों को सपोर्ट देना भी आवश्यक है इसके लिए डंडे को इस प्रकार से गाड़ते हैं कि कॉर्म्स क्षतिग्रस्त न हो, और निकल रही स्पाइक को बांध देते हैं और पौधे के पास हल्की मिट्टी भी चढ़ाना अत्यावश्यक होता है। डॉक्टर त्रिपाठी ने बताया कि स्पाइक का नीचे का फूल से हल्का रंग दिखाई देने लगे तो स्पाइक को सावधानी पूर्वक तेज चाकू से काटकर, पानी भरी बाल्टी में रखते जाते हैं और बाद में उनको ऊपर के सभी फ्लोरेटस क्षतिग्रस्त हुए बिना लंबे (ट्यूबलाइट के) डिब्बे में इस प्रकार रखते हैं कि उनके फ्लोरेट्स क्षतिग्रस्त न होने पाए इस प्रकार से एक कॉर्म्स लगाने पर कम से कम दो से तीन स्पाइक और बाद में दो से तीन कोर्म्स और 15 से 20 कारमेल्स प्राप्त हो जाने के कारण एक हेक्टेयर क्षेत्र से डेढ़ से दो लाख की आय किसान को प्राप्त हो जाती है किसान भाई लाल रंग के फ्लोरेट्स वाली स्पाईक प्राप्त करने के लिए फातिमा, बंटम, डिकेनथालोन, आदि, सफेद रंग के लिए अल्थीना, ड्रीम गर्ल, ईस्टर्न स्टार, सुपरस्टार, मून फ्रॉस्ट, आदि, पीले रंग के लिए गोल्डन हार्वेस्ट, लाइमलाइट, मेडूसा सपना स्वीट फेरी, आदि, ऑरेंज के लिए फीस्टर, ऑरेंज ब्यूटी, टेनजरइन, जिप्सी डांसर आदि और जातियों को अपनी पसंद के अनुसार लगा सकते हैं उन्होंने किसानों को सलाह दी है की अत्यधिक ठंड में ग्लेडियोलस की खेती का प्रबंधन करके सभी स्पाइक्स को बचाया जा सकता है।

/2022 10:24 PM Page 1

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 13 अंक : 197 कानपुर, मंगलवार 18 जनवरी, 2022 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपये

राष्ट्रीय स्वरूप

बदलते मौसम में अधिक लाभ के लिए करें ग्लेडियोलस में देखभाल

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉ डीआर सिंह के निर्देशन में उद्यान विज्ञान विभाग के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष डॉ विवेक कुमार त्रिपाठी ने बताया कि विभिन्न रंग बिरंगे फ्लोरेट्स के साथ कट फ्लावर के रूप में अतिथियों को देने के लिए बुके के रूप में प्रयोग किये जाने वाले ग्लेडियोलस के कॉर्म्स को सामान्यतः अक्टूबर के महीने में समतल खेत में या मेड बनाकर 20 × 20 सेंटीमीटर या 25 से 30 सेंटीमीटर की दूरी पर लगाते है।वैसे तो सामान्यत: ग्लेडियोलस शरद ऋतु में ही 18 से 25 डिग्री सेल्सियस तापक्रम पर अच्छी तरह पुष्पन करता है लेकिन जब तापक्रम 1 से 4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तब उस पर पुष्पन कम हो जाता है और यदि किसान भाइयों ने रोपड़ देर से (नवंबर के अंतिम सप्ताह से दिसंबर में) किया है। तो इस समय पौधों की वृद्धि अधिक प्रभावित होती है। 1 डिग्री सेल्सियस तापक्रम पहुंचने पर पौधों की स्पाइक भी प्रभावित हो जाती है। और उसमें फ्रीजिंग इंजरी हो जाती है। इससे बचाव के लिए खेत में पलवार बिछाकर नमी बनाए रखना अति आवश्यक होता है। जब स्पाइक निकलना प्रारंभ हो जाएं तब डंडे की सहायता से पौधों

को सपोर्ट देना भी आवश्यक है इसके लिए डंडे को इस प्रकार से गाडते हैं कि कॉर्म्स क्षतिग्रस्त न हो, और निकल रही स्पाइक को बांध देते हैं और पौधे के पास हल्की मिट्टी भी चढ़ाना अत्यावश्यक होता है। डॉक्टर त्रिपाठी ने बताया कि स्पाइक का नीचे का फूल से हल्का रंग दिखाई देने लगे तो स्पाइक को सावधानीपूर्वक तेज चाकू से काट कर, पानी भरी बाल्टी में रखते जाते हैं और बाद में उनको ऊपर के सभी फ्लोरेटस क्षतिग्रस्त हुए बिना लंबे (ट्यूबलाइट के) डिब्बे में इस प्रकार रखते हैं कि उनके फ्लोरेट्स क्षतिग्रस्त न होने पाए। इस प्रकार से एक कोर्म्स लगाने पर कम से कम दो से तीन स्पाइक और बाद में दो से तीन कोर्म्स और 15 से 20 कारमेल्स प्राप्त हो जाने के कारण एक हेक्टेयर क्षेत्र से डेढ़ से दो लाख की आय किसान को प्राप्त हो जाती है। किसान भाई लाल रंग के फ्लोरेट्स वाली स्पाईक प्राप्त करने के लिए फातिमा, बंटम डिकेनथालोन, आदि, सफेद रंग के लिए अल्थीना, ड्रीम गर्ल, ईस्टर्न स्टार, सुपरस्टार, मून फ्रॉस्ट, आदि, पीले रंग के लिए गोल्डन हार्वेस्ट, लाइमलाइट, मेडूसा सपना स्वीट फेरी, आदि, ऑरेंज के लिए फीस्टर, ऑरेंज ब्यूटी, टेनजरइन, जिप्सी डांसर, आदि और जातियों को अपनी पसंद के अनुसार लगा सकते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है की अत्यधिक ठंड में ग्लेडियोलस की खेती का प्रबंधन करके सभी स्पाइक्स को बचाया जा सकता है।